Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 02, (जुलाई, 2025)
पृष्ठ संख्या 45–46

प्राकृतिक खेतीः पर्यावरण संरक्षण और पोषण का समाधान

डॉ० धीरज पंघाल[1], डॉ० प्रीति मलिक[2], डॉ० पवन कुमार[3], डॉ० सरोज देवी[4] एवं इंजी० रवि[5]

[1]जिला विस्तार विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), [2]जिला विस्तार विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), [3]जिला विस्तार विशेषज्ञ (विस्तार शिक्षा), [4]जिला विस्तार विशेषज्ञ (गृह विज्ञान), [5]जिला विस्तार विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी), कृषि विज्ञान केंद्र, जींद, भारत।

Email Id: – dheerajpanghal27@gmail.com

पिछले कई वर्षों से खेती में काफी नुकसान देखने को मिल रहा है। इसका मुख्य कारण हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग है। इसमें लागत भी बढ़ रही है। भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बदलाव हो रहे है जो काफी नुकसान भरे हो सकते हैं। रासायनिक खेती से प्रकृति में और मनुष्य के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई है। किसानों की पैदावार का आधा हिस्सा उनके उर्वरक और कीटनाशक में ही चला जाता है। यदि किसान खेती में अधिक मुनाफा या फायदा कमाना चाहता है तो उसे प्राकृतिक खेती की तरफ अग्रसर होना चाहिए। रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से मिट्टी की उर्वरक क्षमता काफी कम हो गई। जिससे मिट्टी के पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ गया है। इस घटती मिट्टी की उर्वरक क्षमता को देखते हुए जैविक खाद उपयोग जरूरी हो गया है। प्राकृतिक खेती को रासायनमुक्त खेती के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें केवल प्राकृतिक आदानों का उपयोग करता है। कृषि–पारिस्थितिकी में अच्छी तरह से आधारित, यह एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है, जिससे कार्यात्मक जैव विविधता के इष्टतम उपयोग की सुविधा मिलती है। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशकों द्वारा फसल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है।

प्राकृतिक खेती के चार सिद्धांतः

- **पहला सिद्धांत है, खेतों में कोई जोताई नहीं करनाः** यानी न तो उनमें जुताई करना, और न ही मिट्टी पलटना। धरती अपनी जुताई स्वयं स्वाभाविक रूप से पौधों की जड़ों के प्रवेश तथा केंचुओं व छोटे प्राणियों, तथा सूक्ष्म जीवाणुओं के जरिए कर लेती है।
- **दूसरा सिद्धांत है** कि किसी भी तरह की तैयार खाद या रासायनिक उर्वरकों का उपयोग न किया जाए।
- **तीसरा सिद्धांत है,** निंदाई–गुड़ाई न की जाए। न तो हलों से न शाकनाशियों के प्रयोग द्वारा। खरपतवार मिट्टी को उर्वरा बनाने तथा जैव–बिरादरी में संतुलन स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। बुनियादी सिद्धांत यही है कि खरपतवार को पूरी तरह समाप्त करने की बजाए नियंत्रित किया जाना चाहिए।
- **चौथा सिद्धांत** रसायनों पर बिल्कुल निर्भर न करना है। जोतने तथा उर्वरकों के उपयोग जैसी गलत प्रथाओं के कारण जब से कमजोर पौधे उगना शुरू हुए, तब से ही खेतों में बीमारियां लगने तथा कीट–असंतुलन की समस्याएं खड़ी होनी शुरू हुई। छेड़छाड़ न करने से प्रकृति–संतुलन बिल्कुल सही रहता है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. जीवामृतः जीवामृत किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसेः गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल है, यह भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोत्तरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव–जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोत्तरी होती है।

जीवामृत बनाने की विधि

सामग्रीः

- देसी गाय का गोबर– 10 किलो,
- देसी गाय का गोमूत्र– 10 लीटर,
- गुड़– 2 किलो, बेसन (चना आटा)– किलो,
- खेत की मिट्टी– 1 किलो,
- पानी– 180 लीटर

विधिः

- सभी सामग्री को 200 लीटर पानी में मिलाएं।
- दिन में 2 बार लकड़ी की छड़ी से अच्छे से हिलाएं।
- ढककर छायादार जगह पर 5–7 दिन रखें।
- तैयार होने पर उपयोग करें।

2. बीजामृत

देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध–जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

बीजामृत बनाने की विधिः

- एक मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में 20 लीटर पानी लें।
- उसमें 5 किलो गोबर और 5 लीटर गोमूत्र मिलाएं।
- 50 ग्राम चूना (पहले से पानी में बुझाया हुआ) डालें।
- सभी सामग्री को दिन में दो बार लकड़ी से अच्छी तरह मिलाएं और 24 घंटे के लिए छोड़ दें।
- यह बीजामृत तैयार है।

3. आच्छादन

भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी ऊपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की ऊपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोत्तरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. वाफसा (भूमि में वायु प्रवाह)

वाफसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा – तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के फायदे

- मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।
- फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि
- भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
- सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है।
- बाजार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है।
- जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।